MIC I Sem I

Justice :- न्याय :->

न्याय :-> न्याय शब्द का संबंध केवल राजनीति से न होकर धर्म व दर्शन शास्त्र से भी है। भारतीय चिंतन में 'न्याय' को 'धर्म' का पर्यायवाची माना गया है। प्लेटो के अनुसार न्याय की स्थापना तब होती है जब समाज के विभिन्न वर्ग – शासक वर्ग, सैनिक वर्ग तथा श्रमजीवी – अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करते हैं। वास्तव में, सामाजिक संबंधों में संतुलन और सामंजस्य बनाए रखने के लिए ही न्याय की आवश्यकता होती है। उदारवादी, मार्क्सवादी, गांधीवादी और सुधारवादी, ये सभी विचारक पृथक-पृथक ढंग से न्याय की व्याख्या करते हैं।

न्याय की परिभाषा :-> न्याय एक अत्यंत जटिल अवधारणा है। उसमें कानूनी स्थिति, राजनीति, समाजनीति और अर्थनीति चारों का बोध होता है इसके अतिरिक्त, नैतिकता के सभी सम्बन्धी सिद्धांत भी इसके अंतर्गत आ जाते हैं। इसलिए न्याय की परिभाषा करना सरल नहीं है। यह शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'Jus' से बना है जिसका अर्थ है बंधन या बांधना। इसका आशय यह है कि 'जस्टिस' उस व्यवस्था का नाम है जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से संबद्ध है। 'समाज' सामाजिक बंधनों का ही एक दूसरा नाम है। समाज में बच्चे हैं, माता पिता हैं, विद्यार्थी हैं, शिक्षक हैं, कर्मचारी हैं, मालिक हैं, कृषक हैं, मजदूर हैं और साधारण नागरिक हैं। इन सबके अपने-अपने अधिकार हैं और एक-दूसरे के प्रति इनके कुछ कर्तव्य भी हैं। 'न्याय' का तकाजा है कि यह सभी अपनी-अपनी भूमिकाएँ भरते हैं। समाज में जितने मनुष्य रहते हैं उनमें से प्रत्येक को उसका उचित अधिकार दिलाने वाली व्यवस्था को ही न्यायपूर्ण व्यवस्था माना जाता है। आधुनिक विद्वानों द्वारा न्याय की जो परिभाषाएँ दी हैं वो निम्नलिखित हैं :→

रॉबर्ट टकर के अनुसार :→ न्याय का अर्थ है कि जब दो पक्ष
या दो सिद्धांतों के बीच संघर्ष हो तो उसका समाधान
इस तरह से किया जाय कि किसी भी पक्ष के उचित अ
हनन न हो।"

बैन तथा पीटर्स :→ "न्यायपूर्वक कार्य करने का अर्थ यह
जब तक भेदभाव किए जाने का कोई उचित कारण न हो
सभी व्यक्तियों से एक-सा व्यवहार किया जाए।"

मेरियम के अनुसार :→ प्रथम, न्याय का संबंध मान्यताओं के
विचारों से है। समय और परिस्थितियों के अनुसार न्या
की अवधारणा में भी परिवर्तन हुए हैं, जिस युग में दासप्र
को उचित माना जाता था, उन दिनों दास का क्रय-विक्रय
न्याय-संगत व्यवस्था थी किन्तु आज वह न्याय-संगत
है।

द्वितीय :- न्याय का संबंध प्रक्रियाओं से भी है।"

तृतीय :- "प्रत्येक मनुष्य को वे अधिकार व सुविधाएं दी
जाती हैं जिन्हें समाज उचित मानता हो।"

न्याय का स्वरूप अथवा विशेषताएँ :→

मानवीय व्यवहार के सन्दर्भ में ही न्याय का प्रश्न

न्याय की कसौटी है - निष्पक्षता,

न्याय का अर्थ यह नहीं है कि किसी भी प्रकार का

नहीं।

'न्याय' व 'स्वतंत्रता' का आपस में गहरा सम्बंध

न्याय का समानता से संबंध है,

बन्धुता अथवा भाईचारा के प्रति सम्मा

प्रकृति की आवश्यकताओं, से है।

न्याय का संबंध सुनीति से